।। श्रीराधा ।।

परम पूज्य नानाजी जन्मोत्सव

१७ मई २०२६

।।श्रीराधाा।।

नानाजी जन्मोत्सव २०२६

सभी सदस्यों का परम पूज्य नानाजी के इस जन्मोत्सव में हार्दिक स्वागत है। जो सदस्य ऑनलाइन सम्मिलित हैं, आप सभी का इस उत्सव में हार्दिक स्वागत। श्री युगल सरकार, परम पूज्य बाबूजी-बाबा, परम पूज्य महाराजजी-ठाकुरजी, परम पूज्या नानीजी-नानाजी की असीम कृपा से ही हम इस उत्सव का दर्शन-श्रवण कर रहे हैं, अतः इन सभी के पूज्य चरणों में प्रणाम करते हुआ, तथा पूज्या माँ और मौसी से अनुमति लेते हुए, आज का उत्सव आरम्भ करते हैं। सर्वप्रथम, श्री युगल सरकार के चरणों में बाल-मंडली के सदस्य अपनी सेवा प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग
कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई ।
मोहन अति ही सुजान परम चतुर गुन निधान,
जान बूझि एक तान चूक के बजाई ।।
प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुन प्रवीन
अति नवीन रूप सहित तान वह सुनाई ।
बल्लभ गिरिधरन लाल रीझि दई अंक माल,
कहत भलें भलें लाल सुंदर सुखदाई ॥

(अर्थः श्रीराधा और श्रीकृष्ण अपने आनन्दमें निमग्न कुञ्जभवनमें बैठे हैं। श्रीकृष्णने अपने हाथोंकी मुरलीको अधरोंपर रखकर और अपने श्रीमुखसे फूंक भरकर सारंग रागकी एक तान छेड़ी। गोपी-मोहन श्रीकृष्ण बड़े ही सयाने एवं अत्यन्त चतुर हैं और (संगीतकलामें) गुणोंके भण्डार हैं; इसपर भी उन्होंने जान-बूझकर एक तान अशुद्ध रुपमें बजायी । तब प्यारीजीने वीणा लेकर उसी तानको अत्यन्त नये ढंगसे सही रूपमें बजाया। वे सभी कलाओं और गुणोंकी पण्डिता जो ठहरीं ! (प्यारे श्रीकृष्ण तो यही चाहते थे कि प्यारी श्रीराधा बजायें और इसीलिये मुरली बजानेमें उन्होंने जान-बूझकर चूक की थी।) वल्लभजी कहते हैं कि श्रीराधाकी प्रशंसा करनेके मिससे सुखकी वर्षा करनेवाले गिरधारी प्यारे श्यामसुन्दरने रीझकर उनको ह्रदयसे लगा लिया और वे 'सुन्दर'-'सुन्दर' कह-कह करके उसकी सराहना करने लगे ।)

श्री युगल सरकार एवं सभी पूज्य संतों की कृपा से पूज्य नानाजी के मसूरी परिकर द्वारा संत-वचनों की उपयोगी सामग्री कुछ ही दिनों में प्रकाशित की जाएगी। आज के उत्सव में इस सामग्री का समर्पण भी किया जा रहा है, जिसके ४ अंग हैं -

१) परम पूज्य बाबूजी-बाबा के वचनों की booklet - (मेरी अतुल संपत्ति, पद रत्नाकर के २ पद, आस्तिकता-सार के ३ लेख,)

२) पूज्य नानाजी के वचनों की booklet - (साधना में सावधानी, पाँच आनंद बिंदु)

३) पूज्य नानाजी के कुछ प्रिय शेर (अर्थ-सहित) की booklet

४) पूज्य नानाजी के सूक्त (one liners) का flip-book
इस सामग्री को ऑर्डर करने के लिए अपने-अपने गोष्ठी के संचालक से संपर्क कर सकते हैं।
तो आइए, श्री भगवन्नाम कीर्तन के साथ सामग्री का समर्पण करें।

राधिका रमण अम्बुज नयन, नन्द नन्दन नाथ हे!
गोपिका प्राण मन्मथ मथन, विश्व रञ्जन कृष्ण हे!

परम पूज्य नानाजी के इस जन्मोत्सव में सभी का पुनः हार्दिक स्वागत है। यह तो हम सभी जानते हैं कि नानाजी के जीवन का आधार-ग्रंथ था श्रीमद्भगवद्गीता। वे कहते थे - गीता जी आपके जीवन को केवल खेल नहीं अपितु मनोरंजक खेल बना देगी। तो आइए आज के उत्सव में हम यह दर्शन करें कि पूज्य नानाजी ने अपने चारों ओर प्रफुल्लता और उत्साह से भरा खेल जैसा वातावरण कैसे बनाए रखा, चाहे जीवन के विभिन्न उतार-चढ़ावों में, चाहे दैनिक जीवन की गतिविधियों में।

साथ ही, भक्तों और संतों ने गीता शास्त्र को प्रथम रस-ग्रंथ भी घोषित किया है, क्योंकि श्री युगल सरकार की रस-उपासना के लिए यह आधार ग्रंथ है, इसमें वर्णित सिद्धांतों को ही जीवन में धारण कर रस उपासना कर पाना सहज रूप से संभव हो जाता है। नानाजी के जीवन में गीता शास्त्र की शिक्षा को धारण कर किस प्रकार हर व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति में भगवददर्शन कर, भगवत्कृपा का अनुभव करना और न केवल स्वयं सदैव प्रसन्न रहना अपितु अपने पास आने वाले हर व्यक्ति को प्रसन्न कर देने की सामर्थ्य किस प्रकार मूर्तिमान हुई, इसके दर्शन का सौभाग्य आज के उत्सव के माध्यम से हमें प्राप्त हो रहा है।

गीताजी का प्रथम अध्याय है 'अर्जुन विषाद योग' - और उसी का अनुसरण करते हुए आज के उत्सव का आरम्भ उस समय से करते हैं जब नानाजी इतने निराश हुए कि पूरे दो वर्ष तक वे गंभीर विषाद में डूबे रहे! विश्वास नहीं होता ना कि नानाजी तो हर समय इतने प्रफुल्ल और सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले थे, और भगवान् के मंगलमय विधान में उनका इतना दृढ़ विश्वास था, उन्ही नानाजी को इतने दिनों तक विषाद भी हुआ था? आइए, नानाजी के ही लिखित शब्दों में इस का वर्णन देखते हैं -

"मेरे बाल्यकाल में अंग्रेजी शासन बहुत सुदृढ़ था। अंग्रेजी शासन का मुख्य स्तम्भ जिले का कलेक्टर होता था जो इंडियन सिविल सर्विस अर्थात् आई०सी०एस० का सदस्य होता था। (ICS service का महत्त्व हम इस बात से समझ सकते हैं कि इसमें चयनित होने पर प्रशिक्षण के लिए अफसरों को दो वर्ष के लिए England भेजा जाता था।) … बाल्यकाल से ही मेरे मन में इस

सेवा के प्रति गहरा आकर्षण हो गया और स्कूल व कॉलेज की परीक्षाओं में परमोच्च स्थान पाने के कारण मेरे मन में दृढ़ विश्वास जम गया कि मैं अवश्य ही समय आने पर इस परीक्षा में सफल हो जाऊँगा। ... किंतु दैववश जब मेरी आयु परीक्षा में बैठने के लिये उपयुक्त हुई उससे एक वर्ष पूर्व ही इस परीक्षा की समाप्ति की घोषणा हो गई। लगभग बारह वर्ष की मेरी अनवरत आशाओं पर ऐसा घोर तुषारपात हुआ कि मेरा मन निराशा के गहरे पानी में डूब गया। मेरी सेवाकाल के प्रथम दो वर्ष इसी अवसाद में कटे किन्तु सुल्तानपुर की नियुक्ति के लगभग एक मास बाद ही एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे अवसाद के गहरे गर्त से झकझोर कर निकाल लिया।"

नानाजी ने लिखा कि नानाजी और नानीजी रात्रि भोजन के लिए एक उच्च अधिकारी के घर आमंत्रित किए गए जो भारतीय ICS के थे। वहाँ एक और कलेक्टर साहब भी आए - और वे भी भारतीय ICS के थे । साथ में उन दोनों की पत्नियाँ भी थीं। कुछ देर में शराब और अभक्ष्य भोजन परोसा गया। दोनों अधिकारी इनका सेवन करने लगे और कुछ ही समय में नशे में इतने धुत हो गए कि सेवक की सहायता से उन्हें बगल के कमरे में जाना पड़ा। वहाँ से भी बहुत देर तक उनके असभ्य भाषण और तबीयत खराब होने की भी आवाज़ें सुनायी देती रहीं। इधर उनकी पत्नियाँ अपने अपने पतियों के अमर्यादित आचरण का वर्णन करते-करते रोने लगीं। नानाजी-नानीजी के लिए वहाँ बैठना दूभर हो गया और वे किसी तरह उनसे विदा लेकर अंधेरे में चुप-चाप घर की ओर पैदल ही लौट रहे थे।

नानाजी ने लिखा - "मेरे मन में उस समय विचारों का भयंकर बवंडर उठ खड़ा हुआ। मैं सोचने लगा कि क्या इसी प्रकार के जीवन के लिये मैं आई०सी०एस० में उत्तीर्ण होने की साध लगाये बैठा था? यदि परीक्षा होती और मुझे उसमें सफलता भी मिलती तो दो वर्ष के प्रशिक्षण के लिय मुझे इंग्लैण्ड जाना पड़ता। उस काल में मुझे इसी प्रकार के लोगों के साथ रहकर सामिष भोजन और मदिरा पान करने के लिये प्रबल प्रेरणा मिलती। उस समय मेरे सामने एक भयंकर प्रश्न उठता - या तो मैं अपनी पारिवारिक परम्परा को त्याग कर एक सफल आई०सी०एस० अधिकारी बनने की होड़ में सामिष भोजन और मदिरापान करने लगता अथवा ऐसा न करने पर या तो एक असफल अधिकारी समझा जाता अथवा असावधानी वश इस बिन्दु पर विरोध मुखर हो जाने पर त्यागपत्र देने के लिये भी विवश किया जा सकता था । यदि मैं अपनी जीवन शैली बदल देता तो निश्चित ही मेरे माता-पिता को ऐसा आघात लगता कि वे स्वयं खाना-पीना छोड़कर मृत्यु का वरन करना उचित समझते। इसके लिये उत्तरदायी होकर क्या मैं कभी जीवन में सुख पा सकता था? उन उच्चाधिकारियों की पत्नियों को दुःखी देखकर मैं जब अपनी प्रसन्नचित्त पत्नी की ओर देखता तो मुझे लगता कि उच्च पदवी न पाने पर भी मेरा जीवन कितना सुखमय था कि घर पर अत्यन्त प्रसन्न माता-पिता और पत्नी के साथ मैं कितना सुखी जीवन व्यतीत कर रहा था।"

इस घटना से नानाजी के मन में यह विश्वास और भी सुदृढ़ हो गया कि भगवान् के प्रत्येक विधान में मंगल ही मंगल भरा है, भले ही हमारी प्राकृत बुद्धि उस मंगलमयता का दर्शन तुरंत ना कर सके। जिस प्रकार घने बादलों के होते हुए भी उनके चमकते किनारे, उस silver lining को देखकर यह आशा जागती है कि पीछे सूरज छिपा है, बाहर निकलने ही वाला है, उसी प्रकार अपनी बेटी के जन्म से नानाजी-नानीजी के मन में यह उत्साह हुआ कि प्रसन्नता की नवीन लहर उनके जीवन में बस आने ही वाली है। इसी भाव से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी बड़ी पुत्री का नाम रखा 'रजत-रेखा' अर्थात् silver lining।

हम सभी के जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल लगने वाली परिस्थितियाँ प्रारब्धवश आती हैं। यदि हम उनके प्रति काम-क्रोध-लोभ के भावों को स्थान देते हैं, तब माया के चक्कर में फँसकर हाथ-पैर मारते हुए दुखी होकर बस नाचते ही रहते हैं - पर उसी परिस्थिति में यदि हम मायापति भगवान् की ओर दृष्टि कर लेते हैं और उनसे कहते हैं - "हे दयामय प्रभु, अब मेरी इस अविद्या को दूर कीजिए, मैं बहुत नाच लिया!" - तो ऐसी पुकार को प्रभु तुरंत सुन लेते हैं।

अर्जुन ने विषाद के समय जब अपने को कार्पण्यदोष से अपहत समझ और शिष्यत्व धारण कर भगवान् से प्रार्थना की, तो भगवान् ने उनके विषाद का हरण गीता के उपदेश के माध्यम से किया। इसी भावना से ओत-प्रोत श्रीसूरदास जी का यह पद हम सब मिल कर गायें -

अब हौं नाच्यौं बहुत गोपाल।
काम क्रोध को पहिरि चोलना, कण्ठ विषय की माल।
महा मोह के नुपुर बाजत, निन्दा शब्द रसाल ।
भरम भरयो मन भयो पखावज, चलत कुसंगत चाल।।
तृष्णा नाद करति घट भीतर, नाना विधि दै ताल
माया को कटि फेंटा बांध्यो, लोभ तिलक दै भाल।।
कोटिक कला कांछि देखराई, जलथल सुधि नहीं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नन्दलाल।।

(हे गोपाल, अब मैं बहुत नाच चुका। काम, क्रोध का चोला पहनकर मैंने गले में विषयों की माला डाल रखी है। महामोह रूपी पायल परनिन्दा रूपी रसयुक्त शब्द बजा रही हैं। मेरा भ्रम से भरा मन ही पखावज बन गया है, जो असंगत चाल से चलता है। अनेक प्रकार से ताल देती हुई तृष्णा मेरे हृदय में नाद कर रही है। मैंने कमर में माया का फेंटा बाँध रखा है, मेरे माथे पर लोभ का तिलक लगा हुआ है। मैंने रुप बना-बनाकर करोड़ों कलाएं दिखलाई हैं, मुझे जल-थल और काल का (स्थान और समयादि का) स्मरण नहीं है। हे नन्दलाल, आप सूरदास के सब प्रकार के अज्ञान को दूर कर दें।)

इस पद की स्वर-रचना पूज्य नानाजी द्वारा ही की गई थी। शास्त्रीय संगीत के प्रति उनके मन में कितना गहन लगाव था, इसकी झलक के लिए एक शिक्षाप्रद संस्मरण प्रस्तुत है। यह घटना १९६६ की है, जब वे कलेक्टर मेरठ के पद पर नियुक्त थे। तब नौचंदी मेले में music

conference हुआ करता था। इसके आयोजन समिति के अध्यक्ष नानाजी थे। पूर्व में ऐसी music conference में शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम में दर्शकों द्वारा बहुत शोर-शराबा और हूटिंग की गई थी, अत: कुछ समय से केवल फिल्मी गायकों द्वारा फिल्मी संगीत गाये जाने की पद्धति थी। इस प्रकार का संगीत सामान्य जनता को आकर्षक व प्रिय होता था। नानाजी का मत था कि भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत कलाकारों को बुलाकर इस कार्यक्रम का भाग बनाना चाहिये। आयोजन समिति के अन्य सदस्यों को यह सुझाव स्वीकार नहीं हुआ। उनकी राय थी कि शास्त्रीय संगीत सब दर्शकों की समझ में नहीं आयेगा। इसके चलते दर्शकगण शोर-शराबा और हूटिंग करेंगे। इससे उन सम्मानीय कलाकारों का अपमान और मेले में अव्यवस्था की संभावना थी। किंतु नानाजी अपने मत पर अटल थे कि उनकी अध्यक्षता में यह हो ही नहीं सकता। नानाजी की ऐसी मान्यता थी कि यदि हम लोगों को प्रसन्न करने के लिये उनके स्तर पर नीचे उतरकर कार्य करने लगते हैं तो उन लोगों का स्तर ऊपर कैसे होगा। बल्कि हमारा स्तर भी नीचे गिरने की आशंका रहेगी। आयोजन समिति के सदस्यों को आशंका थी कि ऐसे दर्शकों के लिए कार्यक्रम करने के लिए कौन सा कलाकार तैयार होगा? इस पर नानाजी ने कई सुप्रसिद्ध कलाकारों के नाम गिनाये जिनसे उनके व्यक्तिगत संबंध थे। नानाजी के कलाकार मित्रों की सूची अत्यंत प्रभावशाली थी - सितार पर पण्डित रविशंकर, सरोद पर उस्ताद अलि अकबर खाँ साहब, गायन में श्रीमति लक्ष्मी शंकर जी, कथक नृत्य में सुश्री रोशन कुमारी, तबले पर गुदई महाराज, आदि आदि । इनके नाम सुनते ही समिति ने अपनी स्वीकृति दे दी और नानाजी के प्रस्ताव अनुसार भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध कलाकारों को मेरठ बुलाया गया।

नानाजी ने सभी कलाकारों को वस्तुस्थिति से अवगत कराया और दर्शकों की सामान्य रुचि बता कर होने वाली हूटिंग की संभावना भी व्यक्त करी। सभी कलाकारों ने नानाजी को आश्वस्त किया कि वे ऐसी परिस्थितियों से अच्छी तरह परिचित हैं व उसको सम्भालने में समर्थ हैं। कार्यक्रम के आरम्भ में विलम्बित ख़याल गाने पर शुरू में ही हूटिंग हुई। उसको सुनकर गायकों ने जल्दी से तबले के साथ जुगलबन्दी शुरु कर दी, जो दर्शकों को रुचिकर लगा व वे शांत हो गये। ऐसे ही अपनी कला-कौशल से संगीतकारों ने पहले सभी को सरल रूप से समझ में आने वाले शास्त्रीय संगीत से आकृष्ट किया और फिर धीरे-धीरे शास्त्रीय संगीत की गहराइयों का प्रदर्शन कर सभी को मोहित कर दिया। यही क्रम अन्य सभी कलाकारों के साथ भी हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि संगीत का कार्यक्रम रात्रि के समय को लांघता हुआ प्रात: ४ बजे तक चलता रहा और सभी दर्शक उसमें एकाग्र चित्त से सम्मिलित हुए। अगले दिन का कार्यक्रम भी दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था, और पंडित रविशंकर व उस्ताद अलिअकबर खाँ साहब की जुगलबन्दी राग सिन्धु भैरवी से समाप्त हुई। इसके फलस्वरुप जब अगले वर्ष के आयोजन के लिये समिति पुन: बैठी तो नानाजी ने पूछा कि "बताइये, किस प्रकार का संगीत आयोजन किया जाये?" तब पूरी समिति का यही मत था

कि शास्त्रीय संगीत का ही आयोजन हो।

यह घटना गीताजी के अंतर्गत लोकसंग्रह के सिद्धांत का मूर्तिमान उदाहरण है, कि किस प्रकार हमारा आचरण अन्यों के लिये उदाहरण स्वरुप बन उन्हें प्रेरणा देता है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।।२१।।

श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है अन्य पुरुष भी उस-उसके ही अनुसार बरतते हैं, वह पुरुष जो कुछ प्रमाण कर देता है, लोग भी उसी के अनुसार बरतते हैं।।२१ ।।

इस घटना के विषय में नानाजी ने समझाया था कि यह हमारा दायित्व है कि हम अपने सम्पर्क में आने वालों की रुचि का स्तर ऊँचा करें। विशेष रुप से ललित कला (fine arts), भगवान् की ओर ले जाने के लिये (अध्यात्मिक उन्नति के लिये) बहुत सहायक होती है। इनके माध्यम से हम अपने अन्त:करण को निर्मल कर भगवान् श्रीकृष्ण के लिये आसन तैयार करते हैं। मन, वाणी एवं कर्मों से उनकी ख़ातिर करने के लिये अपने को प्रस्तुत करते हैं।

खातिर कर लै नई गुजरिया रसिया ठाड़ो तेरे द्वार।।
ये रसिया नित द्वार न आवै, प्रेम होय तो दरसन पावै।
अधरामृत को भोग लगावै, कर महमानी अब मत चूकै समय न बारम्बार।।
हृदय की चौकी कर हेली, नेह को चन्दन चर्च नवेली।
दिक्षा लै बन जइयौ चेली, अरे पुतरिन पलंग बिछाय पलक को कर ले बन्द किवार।।
जो कछु रसिया कहै सु करियो, सास ननद को डर मत करियो।
सोलह कर बत्तीस पहिरियो, दे दे दाम सून की सम्पत्ति जीवन है दिन चार।।
सब से तोड़ नेह की डोरी, जमुना पार उतरि चल गोरी।
निधरक खेल्यौ करियौ होरी, श्याम रंग चढ़ि जाय जा दिना ह्वै जाय बेड़ा पार।।

(इस पद में रसिया श्रीकृष्ण हैं व नई गुजरिया गोपी को सम्बोधन है। हे सखि! तेरे द्वार पर स्वयं रसिया श्याम खड़े हैं। उनका आदर सत्कार कर। वे रोज़-रोज़ नहीं आते हैं, मात्र निष्काम प्रेम से ही उनके दर्शन होते हैं। हे सखि! उनके अधरों के अमृत अर्थात् नाम रस का आस्वाद कर एवं उनका सत्कार कर, यह अवसर बार-बार नहीं मिलेगा। अपने हृदय को उनका आसन बना और उस पर प्रेम रूपी चन्दन लगा। दीक्षा लेकर उनकी दासी बन जा, प्रेम रुपी पलंग बिछा तथा सम्पूर्ण वृत्तियों को संसार से हटाकर पलकों के द्वार बन्द कर ले। ये रसिया श्याम जो कहें वही कर, सास ननद रुपी सामाजिक बन्धनों का भय मत कर। अपने अन्त:करण को दैवी गुण रुपी शृंगार आभूषित कर। अपनी सारी सम्पत्ति उन्हीं को समर्पित कर दे, क्योंकि यह मनुष्य जीवन चार दिन का ही है, संसार के मोह की डोर तोड़कर यमुना पार उस दिव्य क्षेत्र में प्रवेश कर तथा निर्भय होकर प्रेम की होली खेल। जिस दिन श्याम का प्रेम व भक्ति रुपी रंग चढ़ जायेगा, उसी दिन जीवन की नैया पार हो जायेगी।)

जब हम नानाजी के चरण स्पर्श करते तो वे कहते - ‘खुश रहिए! खुश रहिए!’ - फिर यह भी कहते, ‘यह केवल आशीर्वाद नहीं है, यह निर्देश है - कि हर समय “खुश रहिए!!” -

आपके चेहरे पर हमेशा घड़ी की सुइयों की तरह १० बज के १० मिनट दिखायी दे, न कि ४-४०।'

आयु के बढ़ने पर भी नानाजी का यह तत्सुखसुखीया भाव और उनमें भगवत्-प्रेम वितरण की लालसा एक अत्यंत सुंदर रूप में प्रकट होती। वे कहते - "इस आयु में मैं आप सब की और कोई सेवा तो नहीं कर सकता, हाँ इतना अवश्य कर सकता हूँ कि जो भी मेरे कक्ष में आए, वह यहाँ से मुस्कराते हुए लौटे।"

जब नानाजी से पूछा गया कि मन की प्रसन्नता को इतना महत्त्व क्यों दिया जाता है, तो वे कहते कि हमारे मन की प्रसन्नता ही हमारे आध्यात्मिक प्रगति का मापदंड है। इस संदर्भ में वे हमारा ध्यान गीता के अध्याय २ श्लोक ६५ की ओर आकृष्ट करते -

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते । । २/६५ । ।

'(अंतःकरण की) उस निर्मलता के होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और उस प्रसन्न चित्त वाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छी प्रकार स्थिर हो जाती है।'

अर्थात् जब चित्त प्रसन्न होता है, तभी बुद्धि स्थिर हो जाती है, और स्थिर बुद्धि में ही यह एकाग्रता होती है कि दैनिक जीवन की गतिविधियों और घटनाओं को भगवान् से वह जोड़ती रहे। ऐसा करने पर दैनिक जीवन के सभी कार्यों का निर्वाह करते हुए भी मन में उत्साह का भाव हिलोरे लेता रहता है। और जहाँ उत्साह हो, वहीं उत्सव का रूप प्रकट हो जाता है।

उदाहरणार्थ, समाज में रोग का समय अत्यंत दुख, क्लेश, और रुदन का होता है। नानाजी के साथ हमने कुछ विलक्षण ही पद्धति देखी। १९९८ में जब वे गंभीर रूप से बहुत दिनों तक रोग-ग्रस्त थे, तब कई युवाजनों को यहाँ राधा निकुंज में रहकर उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। समस्या यह थी कि युवाजन न तो सेवा की विधि जानते थे, न ही यह समझ पाते थे कि स्वास्थ्य की ऐसी गंभीर स्थिति में प्रसन्न-चित्त कैसा रहा जा सकता है। ऐसे में पूज्या माँ ने युवाजनों के उत्साह-वर्धन के लिए बहुत से उपाय अपनाये। सबसे पहले पेट-पूजा - ५ लीटर के कुकर में सब के लिए वे अपने हाथों से स्वादिष्ट दही-भात बनातीं। फिर प्रसाद पाने के लिए सब सदस्य नानाजी के कक्ष में ही एकत्रित होकर ज़मीन पर पंगत में बैठ जाते। दही-भात का स्वाद ऐसा होता था कि खाते-खाते हाथ रुकता ही नहीं था - और अंत में जब हाथ धोने का समय आया तो एक दिन एक भैया बैठे-बैठे ही धराशाही होकर पुकार उठे - "हे प्रभु, मुझे उठा लो!" यह वचन सुनते ही हँसी के ठहाकों से नानाजी का कक्ष गूँज उठा, सब प्रसन्न-चित्त हो गए और उपरोक्त श्लोक के अनुसार सब की बुद्धि स्थिर

हो गई। कुछ देर ऐसी विनोद-भरी चर्चा के बाद फिर भक्तमाल ग्रंथ में से भक्तों के जीवन चरित्र का रोचक स्वाध्याय होता। भक्तों के जीवन-चरित्र से सभी को भगवद्भक्ति और गुरुजनों की सेवा-पद्धति की अमूल्य शिक्षा प्राप्त होती। फिर भक्तों द्वारा सेवा के आदर्श की तुलना में हम युवाजनों की वानर-सेना की हरकतों पर चर्चा छिड़ जाती। उदाहरणार्थ, पर्याप्त नींद के अभाव में कोई भैया नानाजी को टहलाते टहलाते ख़ुद ही सो जाते - और नानाजी उसका हाथ पकड़ के उसको बगीचे की क्यारी में घुसने से रोक लेते। पुनः हँसी के ठहाकों की लहर उस कक्ष में उमड़ पड़ती। फिर हँसी की लहर से संगीत की लहरियों तक हमें पहुँचाने के लिए नानाजी अपनी वीणा (अर्थात् हारमोनियम) मंगवाकर सब को अपने पद-गायन से रिझा देते। इस प्रकार स्वादिष्ट व्यंजनों, हँसी के ठहाकों, मधुर स्वर-लहरियों और भक्त-गाथाओं के साथ वे दिन बीते। कुछ समय बाद जब एक भैया के वापिस अपने कार्यक्षेत्र लौटने का दिन आया, तो विदा लेते समय उनके नेत्रों में अश्रु छलक उठे, उनका गला भर आया और वे बोल उठे - 'नानाजी की बीमारी में जितना मज़ा आया, उतना पहले कभी नहीं आया!'। यह सुनते ही उस विदाई की गंभीर बेला में भी सबके मुख पर मुस्कान पुनः प्रकट हुई।

इस प्रकार, हर परिस्थिति में अपने और अपने आस पास सभी सदस्यों के मन-मंदिर में सुंदर भावों का निर्माण कैसे किया जा सकता है, यह शिक्षा सभी को सहज रूप से मिलती रही। नानाजी ने बताया कि फूलों को 'सुमन' भी कहते हैं - और जब ऐसे सुंदर भावों से मन को भरा जाता है, तब उसका स्वरूप भी 'सु-मन' अर्थात् 'सुंदर मन' बन जाता है। मन में तत्सुखसुखिया भाव धारण कर उसका रूपान्तर मञ्जरी भाव, गोपी भाव व सखी भाव में होता है। निरन्तर मन उल्लसित रहता है श्रीयुगल की सेवा करने हेतु। और तब हमारा हृदय श्रीयुगलसरकार का कुँज अथवा लीला स्थली बन जाता है।

सखियन फूलन कुंज सजाई।
सोनजुही की गुही मरगोलैं कदली खम्भ जराव जराई।।
बिच बिच मोर मोखन मुखरे ऊपर पत्रनु छजलि लगाई।
बहु विध फूल जाल चहुँ दिसि, तै तिन बिच मणि की मणि झलकाई।।
फूलन चिक फूलन पिक सौहै पिक बैनी मन अधिक सुहाई।
कोट कँगूरन भौंरन ते मनौ गावत हित दंपति ठकुराई।।
छत छबाब परदा पंखुरिन के फूल कलिनु छिटको पिछवाई।
बल्लभ जुगल फूल फबि पाटन राधा बल्लभ राजत राई।।

(सखियों ने पुष्पों का सुन्दर निकुञ्ज सजाया है। सोनजुही और गेंदे के फूलों की लड़ियाँ बना कर केले के खंभों को मणियों से जड़ दिया गया है। बीच-बीच में मोर पंख और मोतियों से सजाया गया है, तथा ऊपर पत्तों की छतरी बनाई गई है। चारों ओर तरह-तरह के फूलों की जालियाँ सजी हैं, जिनके बीच मणियों जैसी चमक झलक रही है। फूलों के झिल-मिल परदे

तथा फूलों की ही मालायें अत्यन्त सुन्दर लग रहे हैं, एवं कोयल की वाणी मन को मोह रही है। भौंरे महल के कंगूरों पर बैठकर मानों युगल दम्पत्ति की महिमा गा रहे हों। छत व परदों को फूलों एवं पंखुड़ियों से सजाया गया है। पुष्पों से सजे सिंहासन पर श्रीयुगलसरकार विराजमान हैं।)

श्रीमद्भागवत महापुराण की गोष्ठी में एक बार ग्रंथ में वर्णन आया कि जो भक्त होता है, वह सदा ही भगवान् की लीला का दर्शन करता रहता है। इसपर नानाजी ने सभी सदस्यों से पूछा - इस वाक्य का क्या मतलब है कि "वह सदा ही लीला का दर्शन करता है"? क्या वह भक्त २४ घंटे टी० वी० के सामने बैठकर लीला की रिकॉर्डिंग देखता रहता है? ऐसी आज्ञा तो भागवतजी कभी नहीं देंगी। तो फिर इस वाक्य का क्या अर्थ हो सकता है।

जब कोई जवाब न दे सका, तब नानाजी ने समझाया - इसका अर्थ यह है कि भक्त को भगवान् की लीला का दर्शन इतना अधिक प्रिय लगता है कि उसके सामने जो भी परिस्थिति आए, जिस भी व्यक्ति से उसका संपर्क हो, उन सब के रूप में वह अपने प्रभु और उनकी लीला का ही दर्शन करता है। इसको प्रमाणित करते हुए वे गीताजी में से पूज्य बाबा के अत्यंत प्रिय श्लोक की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते - अध्याय ६ का श्लोक संख्या ३० - जिसमें भगवान् कहते हैं -

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।।

'जो पुरुष सब में मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सबको मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता है, क्योंकि वह मेरे में एकीभाव से स्थित है।'

इस प्रकार जब भागवत-प्रेम के मार्ग पर आगे बढ़ा जाता है, तब उस प्रेम का स्वरूप कैसा होता है, इसका संकेत नारदभक्ति सूत्र में इस प्रकार वर्णित है -

गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षणवर्धमानमविच्छिन्नं सूक्ष्मतरमनुभवरूपम्॥ ५४॥

यह प्रेम गुणरहित है, कामनारहित है, प्रतिक्षण बढ़ता रहता है, विच्छेदरहित है, सूक्ष्मसे भी सूक्ष्मतर है और अनुभवरूप है।

प्रेम का यह भाव प्रतिक्षण बढ़ता रहता है, और विच्छेद्-रहित अर्थात् निरंतर रहता है। इस स्थिति में चित्त केवल-केवल भगवान् की ओर उन्मुख रहता है, उनके दर्शन के लिए एक व्याकुलता छायी रहती है, और उनसे एक पल का वियोग भी असहनीय प्रतीत होता है।

तुव मुख चंद चकोर ए नैना।
अति आरत अनुरागी लंपट भूलि गई मति पलहुँ लगै ना।
अरबरात मिलिबे को निसि दिन मिलेइ रहत मानो कबहुँ मिलै ना।
भगवतरसिक रसिक की बातैं रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना।।

(हे राधारानी ! तुम्हारा मुख चन्द्रमाके समान है और मेरे ये नयन चकोर-सदृश इतने अनुरक्त एवं आसक्त हैं कि बिना देखे अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। इनकी सुधि-बुधि खो गयी है। पलकें तो एक क्षणके लिये भी नहीं पड़ती। मिलनेके लिये ये रात-दिन व्याकुल रहते हैं और मिले रहनेपर भी इन्हें ऐसा लगता है मानो कभी मिले ही नहीं। भगवतरसिकजी कहते हैं कि रसिककी बातोंको बिना रसिकके दूसरा कोई समझ नहीं सकता।)

श्री प्रिया-प्रियतम की भक्ति-साधना करने के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण आधार-स्तंभ है कृतज्ञता का भाव! पूज्या माँ ने हमें कई बार समझाया कि भक्ति केवल कृतज्ञता ही है। हृदय में आभार का यह भाव निरंतर लहराता रहे - पर केवल इतना ही नहीं, अपने आचरण और वचनों द्वारा उस भाव की अभिव्यक्ति भी अवश्य हो।

इसका अनुपम आदर्श नानाजी के आचरण में सहज ही विद्यमान था। उनके हृदय में यह अभिलाषा सदा ही छायी रहती थी कि मैं अपने सभी बच्चों पर किस प्रकार अपना दुलार उड़ेल डालूँ, किस प्रकार सब को अपने कंधे पर बैठा कर जीवन की आनंदमयी यात्रा का दर्शन करवा सकूँ । ऐसी स्थिति में उनको किसी भी सदस्य से किसी भी प्रकार की सेवा लेना अत्यंत अरुचिकर लगता था - और अस्वस्थता अथवा वृद्धावस्था के कारण उन्हें मजबूरी में यदि दूसरों से सेवा लेनी होती, तब उनके धैर्य और सहनशीलता की कड़ी परीक्षा होती। ऐसे में, उन्होंने एक सुंदर परंपरा आरम्भ की - Nanaji's Annual Treat! - जिसमें उन्होंने घोषणा करी कि परिकर के सभी सदस्यों के लिए वे स्वयं अपने हाथों से पराठा-सब्ज़ी का प्रसाद बनाकर खिलायेंगे। यह कोई आसान कार्य नहीं था क्योंकि नानाजी के छोटे, पर सुखी परिवार में कम से कम २५-३० सदस्य थे। पर नानाजी अडिग थे कि साल भर यह सब बच्चे मेरी इतनी सेवा करते हैं, कम से कम एक दिन तो में उनके लिए पूरा प्रसाद बना ही सकता हूँ। उनसे कुछ प्रेम-भरी bargaining की गई - और फिर अंत में वे इस बात पर राज़ी हुए कि प्रत्येक सदस्य के लिए वे कम से कम एक करारा पराठा तो बनायेंगे ही बनायेंगे - और साथ में सब के लिए सूखे आलू-गोभी की भुनी सब्ज़ी भी बनायेंगे।

प्रतिवर्ष सर्दियों में कोई एक उपयुक्त दिन निश्चित किया जाता, और राधिका रानी की रसोई में नानाजी एक ऊँचे स्टूल पर अपना आसान जमा लेते। उनके इर्द-गिर्द खड़ी दीदी या भैया को बस इतनी छूट मिली कि बीच-बीच में उन्हें सामग्री या बर्तन पकड़ाते रहें, जिससे स्टूल से उन्हें बार-बार उठना न पड़े। एक अनुभवी रसोइये कि भाँति नानाजी ३० पराठों का आटा माँड़ कर, फिर पानी के बर्तन में उसे कुछ देर भिगोकर रख देते, जिससे आटे की गरमी शांत हो सके। तत्पश्चात एक तरफ़ सब्ज़ी काटते और दूसरी तरफ़ चूल्हे पर बड़ी कढ़ाई और तवा चढ़ाते। आटा जब तैयार हो जाता तब तिकोने आकार में वे पराठे बेलते और तवा पर सेकते हुए दबा-दबा कर उसे करारा बनाते। तत्पश्चात सब्ज़ी की flavouring करके कढ़ाई में खूब देर तक भून-भूनके उसे पकाया जाता। इस प्रकार

कई घंटों तक रसोई में बैठकर सब के लिए वे प्रसाद बनाया करते थे - और इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में कितना तो वे अपना प्रेम, दुलार, आभार और आशीर्वाद भी उस प्रसाद में घोल देते, यह तो ठाकुरजी और उनके बीच का रहस्य ही रहता।

श्रीयुगलसरकार के प्रति प्रेम के जिन बीजों को नानाजी ने हमारे अन्त:करण में बोया, वह बीज पल्लवित-पुष्पित होकर एक सुंदर बेल बन सके, उसके लिए उसका पोषण नानाजी अपने हाथों से बने प्रसाद द्वारा करते थे। ऐसा दिव्य प्रसाद पाने के अनुभव को शब्दों में भला कैसे व्यक्त किया जाये। बस, बारम्बार नानाजी के प्रति आभार और उनके प्रेम की जयकार ही सब के होंठों पर विराजित होती। हमें इतने वात्सल्यमय गुरुजन मिले हैं, जो आज भी हम सब को उसी प्रेम के साथ सम्भाल रहे हैं, इस सौभाग्य के लिए मन में आभार रखते हुए आइए हम सब मिलकर श्री प्रिया-प्रियतम को भोग लगाएँ।

राधा मोहन करत बियारी।
एक कर थार सँवारे सुंदरि एक वेष एक रूप उज्यारी।।
मधु मेवा पकवान मिठाई दंपति अति रुचिकारी।
सूरदास को झूठन दीनी अति प्रसन्न ललिता री।।

श्री राधाकृष्ण ब्यालू (रात्रि का भोजन) कर रहे हैं। कई एक सुन्दरियाँ अपने हाथों से थाली सजाने में लगी हैं। वे एक ही अवस्था की हैं और उनका एक-सा ही दीप्तियुक्त रूप है। श्री प्रिया-प्रियतम दोनों को अत्यन्त स्वादिष्ट लगने वाली वस्तुएँ - जैसे मधु, मेवा, पकवान और मिठाई आदि थाल में सजी हुई हैं। ललिता जी ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर सूरदास जी को जूठन प्रसाद प्रदान किया।

राधा कृष्ण मनोहर जोरी,
नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी।

अँचवन करत लाडिली लाल ।
कंचन झारी गहत परसपर श्रीराधा गोपाल ।।

किशोरी राधा और श्रीकृष्ण भोजनके पश्चात् आचमन कर रहे हैं। एक दूसरेको आचमन करानेके लिये वे अपने-अपने हाथों में सोनेका जलपात्र लेते हैं।

बीरी सरस सखी रुचि दीनी।
लई प्रीति कर प्रीतम प्यारी अधरन लाली लसी नवीनी

(सखी ने रसभरे पानके बीड़े को अत्यन्त प्रेम से निवेदित किया। श्रीप्रिया-प्रियतम ने उसे प्रीतिपूर्वक हाथों से लेकर आरोग लिया और उनके अधरों पर एक नयी लालिमा छा गयी।)

हमारे जीवन को मनोरंजक खेल बनाना, यह गीता का विलक्षण प्रभाव है। इस कारण जीवन की हर परिस्थिति में उत्साह परिपूर्ण रहता है।इस उत्साह की अभिव्यक्ति हम सभी ने नानाजी के जीवन में देखी। वृद्धावस्था में भी वे सबसे ज़्यादा sporting और adjusting थे। बच्चों का मन कर रहा हो की आज drive पर जाने का मौसम हो रहा है - तो drive के लिए नानाजी तैयार। गर्मी में काम करते-करते बच्चे थक गए हों तो सब के लिए ice-cream party organize करने के लिए नानाजी तैयार। और माँ के जन्मदिवस के लिए surprise utsav की तैयारी में बच्चे अगर नानाजी से प्रार्थना करें कि माँ को भनक न लगे, इस secrecy के साथ वे कोई पद tune करने की कृपा करें, तो माँ के कमरे से दूर अपने bathroom में चुपके से अपना हारमोनियम रखवाकर वहीं पर पद की मधुर धुनें compose कर लिया करते थे।

और तो और, गोष्ठियों को भी मनोरंजक बनाने के लिए वे अथक प्रयास करते, नए नए उपाय सोचते। भागवत जी की गोष्ठी में जब उन्हें लगा कि सब की रुचि कुछ कम हो रही है तब उन्होंने पूरे अध्याय पर एक quiz तैयार किया, फिर गोष्ठी में सभी सदस्यों में token बँटवाये जिन पर क्रम से नम्बर लिखे गए थे। अब जिसके पास जिस भी number का token होता, उसे quiz में से उसी number के प्रश्न का उत्तर देना होता। इस नवीनता से भागवतजी की गोष्ठियों का तुरंत रुप परिवर्तन हो गया और वह एक रोचक खेल जैसा बन गया।

रोचकता बनाए रखने के लिए वे विनोद का भी भरपूर उपयोग कर लिए करते थे। यदि किसी दिन गोष्ठी में सदस्यों की संख्या कम देखते तो बुरा नहीं मानते, बल्कि किसी सदस्य को कहते - बेटे आज लोग काफ़ी कम हैं, जरा बेगमपुलचौक पर जाकर गोष्ठी में बैठने के लिए कुछ मज़दूर ले लाओ! या फिर एक चुटकुला सुनाते - कि किसी महात्मा के प्रवचन में ऊबकर सारे श्रोता एक-एक करके उठ कर चले गए। बस एक ही आदमी बैठा रहा। उसे देखकर महात्मा जी ने प्रसन्न होकर कहा 'भाई, तुम तो बड़े श्रद्धालु मालूम पड़ते हो। इतने ध्यान से बैठकर प्रवचन सुन रहे हो!' उस आदमी ने पलट कर कहा - 'अजी मैं तो tenthouse वालों के साथ हूँ, बस दरियाँ समेटने के लिए रुका हूँ।' सब सदस्य ठहाका मारके हँसने लगते - और फिर गीताजी का वही श्लोक मूर्तिमान हो जाता था - **प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते -** 'प्रसन्न चित्त वाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छी प्रकार स्थिर हो जाती है।'

इस प्रकार, दैनिक-जीवन के खेल में शास्त्र के नियमों का पालन, सुख-दुख के डोलन में कृपासागर की सम्भाल का अनुभव, और हर परिस्थिति में आनंद अनुभव करने और करवाने की कला से जीवन में श्रीप्रियाप्रियतम की नवीन केलियों का प्रवेश होता है। कहीं जल-केलि, कहीं कन्दुक क्रीड़ा, कहीं नौका विहार, कहीं बसंत में रंगों से केलि - इस दिव्य रस के अनुभव से संसार के उथल-पुथल की परिणति श्रीयुगलसरकार के विहार, नर्तन, गायन-वादन में हो जाती है, और उनके चरणों में पूर्ण समर्पण हो जाता है।

खेलत विपिन वसंत लाडिले नेह भरे पिय प्यारी।
रतन जटित सिंहासन आसन बैठे मधि फुलवारी।।
तनसुख केसर भीने बागे अनुरागे छवि धारी।
भूषन भूषित अंग अंग दुति दमकन चमकन न्यारी।।
ताल मृदंग उपंग बजावत गावत अलि सुखकारी।
रस सरिता ललितादिक निर्तत आनंद मगन महारी।
उड़त अबीर गुलाल लाल घन बन छवि छाई भारी।
निरखत लाल रूप हित दंपति प्रान संपदा वारी।।

(बसन्त ऋतु में वन में श्रीप्रियाप्रियतम प्रेम में भरे केलि कर रहे हैं। पुष्पों की वाटिका के बीच रत्नजड़ित सिंहासन पर श्रीयुगलसरकार विराजमान हैं। उनके वस्त्र केसर से भीनी सुगन्ध महक रही है, एवं उनकी छवि अनुराग से भरी हुई है। उनके अंगों पर सुन्दर आभूषण सजे हुये हैं, जिनकी अद्भुत आभा अत्यन्त शोभा दे रही है। ताल, मृदंग व अन्य वाद्य बज रहे हैं, एवं सखियाँ मधुर गीत गा रहीं हैं। ललिता आदि सखियाँ रस की धारा में डूब कर नृत्य कर रहीं हैं एवं आनन्द में मग्न हैं। अबीर, गुलाल के बादल छा रहे हैं। जिससे पूरा वन लालिमा से ढक गया है। उस लालिमा से भरे युगल रूप को देख कर श्रीरूप हित जी अपनी प्राण एवं समग्र सम्पदा उन पर न्यौच्छावर कर रहे हैं।)

पूज्य नानाजी के निकुञ्ज प्रवेश करने से लगभग एक मास पहले उन्होंने पूज्या माँ से एकान्त में अपनी आन्तरिक अनुभूतियों की चर्चा की। नानाजी ने उन्हें आश्वस्त भी किया कि वे आनन्द की लहरों में झूम रहे हैं अतः वे उनके स्वास्थ्य की बिलकुल चिन्ता ना करें। उस चर्चा से माँ को यह स्पष्ट अनुभव हुआ कि नानाजी का पूज्य राधाबाबा व बाबूजी से पूर्ण रूप से तादात्मय हो गया है और अब उनके शरीर में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ही अवस्थित हैं।

वे आनन्द की लहरों में झूल रहे थे इसलिए उनको अपने शरीर के अस्तित्व का भान ही नहीं था। शरीर रहते हुए भी मानो वे शरीर से मुक्त होकर भगवान् के आनन्दस्वरूप में ही समाये हुए थे। इस प्रकार वे हमारे लिये यह उदाहरण रख गये कि आनन्द समुद्र में डूबने के लिये शरीर छोड़ने की ज़रूरत नहीं है। शरीर में रहते हुए ही अगर हम अपने जीवन को यज्ञ रूप बनाकर जियें और गीता जी को पूरी तरह धारण कर लेने की चेष्टा करें तो हम आज ही, अभी ही, दुःख-सुख से छूट, आनन्द की लहरों में झूम सकते हैं।

अगले पद में आनंद की इन लहरों की कुछ छीटें हम सभी अनुभव कर सकते हैं।

बन नाचे नट नीको आली नन्द को किशोर।
राधे जगत नचायो तेरी ऽ भौं की मरोर।।
ब्रज के किशोर तौ पै डारूँ तृण तोर प्यारो।
सुनी मुरली की धुन मेरो मन भयो मोर।।
कमल कली को ऽ रँग भानु की लली को स्यामा।
मुख चंद्रहुँ सो नीको मेरे नयना हैं चकोर।।
ग्रीवा की लटक हरे नयन की मटक।
करे चित्त पै झपट पीरे पटका को छोर।।
मुख की भुराई भाल बिंदिया सजाई तेरी।
मानो छीर सिन्धु माहीं बाल रवि उग्यो भोर।।
नयनन बसाय तोहें राखूँगी छिपाये प्यारो।
कहूँ भाग न जाय मेरी मुँदरी को चोर।।
मन स्याम रँग दिन रैन राखो सँग प्यारी।
कहाँ जायेगी पतँग तेरे हाथ में है डोर।।

भावार्थ - हे राधे, देखो! नटनागर नन्दकिशोर श्रीकृष्ण वन में अति सुन्दर नृत्य कर रहे हैं। ऐसा क्यों न हो! जब आपकी भृकुटि के विलास से समस्त जगत नाचता है - तो आपके प्रियतम श्रीकृष्ण नृत्य में प्रवृत्त हों, इसमें आश्चर्य ही क्या है? श्रीराधा कहती हैं, हे बृजकिशोर! मैं आप पर तृण तोड़कर अपना सर्वस्व बलिहार देती हूँ (समर्पण कर देती हूँ)। आपकी मुरली की टेर सुनकर तो मेरा मन मोर के समान नृत्य करने लगता है। श्रीकृष्ण कहते हैं, हे वृषभानु की पुत्राी राधे! आपका रंग कमल कली के समान अरुणाई लिये हुए है। आपका मुख चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर है और मेरे नेत्रा चकोर पक्षी के समान उनको निहारते-निहारते अघाते नहीं हैं। श्रीराधा कहती हैं, हे प्यारे आपका ग्रीवा (गर्दन) को एक ओर झुका देना एवं नयनों का मटकाना मेरे मन को हर लेता है, उससे मेरे मन का भटकाव रुक जाता है (अर्थात् मेरा मन आपकी इस अदा को निहारने में टिक जाता है)। आपके पीले पटके की छोर इतनी सुंदर है कि उसका दर्शन मेरे मन में (बिजली के समान) कौंध जाता है। श्रीकृष्ण कहते हैं , हे राधे! आपके मुख पर जो पीलेपन की झांकी है, उस पर जो आपने अपने सुंदर माथे के मध्य में लाल बिंदी सजाई है - ऐसे लगता है जैसे दूध का सागर हो, और उसमें सुबह का लाल-लाल सूरज उग रहा हो। श्रीराधा कहती हैं, हे प्यारे! आपको नैनों में बसाकर, छिपाकर रखूँगी। (डर लगता है कि) मेरी अँगूठी के चोर (आप) कहीं भाग न जाएं (यहाँ यह एक अन्य लीला की ओर संकेत है जिसमें श्रीकृष्ण राधाजी की अँगूठी चुराकर ले जाते हैं) श्रीकृष्ण कहते हैं, हे राधे! मेरा मन तो निरंतर आपके रंग में रंगा हुआ है, मुझे आप कृपा करके दिन-रात अपने पास ही रखिएगा। वैसे भी ये पतंग (अर्थात् मैं) कहाँ जायेगी, अब मेरी डोर आपके ही हाथ में है।

सोनजुही की बनी पगिया अरु चमेली को गुच्छ रहयौ झुकि न्यारो।
द्वै दल फूल कदंब के कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारो।।
नौ तुलसी पटुका घनस्याम गुलाब इजार चमेली को न्यारो।
फूलन आज विचित्र बन्यौ देखो कैसो सिंगारयो है प्यारी ने प्यारो।।

और इधर देखो! राधा प्यारी ने अद्भुत पुष्प-रचना के द्वारा प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र का कैसा शृंगार किया है। सोनजुही पुष्पों

की तो पगड़ी बनी हुई है, जिसमें चमेली का एक गुच्छा निराली अदा से लटक रहा है। कदम्ब पुष्पों का खूब घेरदार जामा है। नीलसुन्दर की विविध रंगवाली चादर की छवि और भी निराली है, जिसमें नाना वर्णों के नव तुलसीदल, विभिन्न प्रकार के गुलाब, गेंदा और चमेली के पुष्पों का उपयोग किया गया है।

नाचत बलभद्र वीर संग लिये युवती भीर।
रास रच्यौ दिव्य तीर तनिया कलिन्दकी।।
नाच उठी यमुनलहर चन्द चाँदनी को पहर।
पीत पटि लहर-लहर नाची नन्द-नन्द की।।
नचे बाल तालन पै श्रम बिन्दु भालन पै।
सजी कमल मालन पै अवलि अलि वृन्द की।।
राधा रंग राच रही पलक खोल जाँच रही।
नैनन में नाच रही मूरति गोविन्द की।।

बलराम और श्रीकृष्ण युवतियों की भीड़ को लेकर नृत्य कर रहे हैं। पीताम्बर धारण किये हुए भगवान् श्रीकृष्ण यमुनाजी के दिब्य तट पर रास कर रहे हैं। यमुना की लहरें भी नृत्य कर रही हैं तथा उस समय सभी ओर चन्द्रमा की चाँदनी फैली हुई है। नृत्य करते हुए नन्द के पुत्रा (श्रीकृष्ण) का पीला पटका भी हिल रहा है। सभी ब्रजबालाऐं संगीत की तान पर नृत्य कर रही हैं, जिससे उनके मस्तक पर श्रम बिंदु झलक रहे हैं। उस स्थान पर समस्त सखी मण्डल के वक्षःस्थल पर कमलों की मालाएं सजी हुई हैं। राधारानी इस रचे हुए रंग को पलक खोलकर निहार रही हैं। उनकी आँखों में गोविन्द की मूर्ति नृत्य करती हुई प्रतीत हो रही है।

सारी सँवारी है सोनजुही अरू जूही की तापै लगाई किनारी।
पंकज के दल को लहँगा अंगिया गुलबाँस की सोभित न्यारी।।
चम्पा को हार हमेल गुलाब को मौर की बेंदी दे भाल सँवारी।।
फूलन आज बिचित्र बन्यो देखो कैसी सिंगारी है प्यारे ने प्यारी।।

भावार्थ - देखो! प्यारे श्रीकृष्ण ने अद्भुत ढंग से सजाकर प्रियाजी का आज कैसा शृंगार किया है! सोनजुही पुष्पों की साड़ी सजायी है, जिसमें जूही की किनारी लगी हुई है। कमल-पुष्प दलों से लहँगा बनाया है और गुलबाँस की कञ्चुकी (चोली) अपनी निराली ही छटा दिखा रही है। चम्पा के पुष्पों का हार बनाया है और गुलाब का हमेल है तथा ललाट पर मौलसिरी के फूल की बेदी शोभा दे रही है।

तालन पै ताल पै तमाल माल मालन पै। वृन्दावन वीथिन विहार वंशी वट पै।।
छित पै छात पै छाजत छटान पै। ललित लतान पै श्री लाडली की लट पै।।
कहे पद्माकर अखण्ड रास मण्डल पै। मण्डित उमण्डित श्री कालन्दी के तट पै।।
कैसी छवि छाई आज सरद जुन्हाई। कैसी छवि छाई या कन्हाई के मुकुट पै।।

भावार्थ - श्री वृन्दावन की शरद रात्रि की शोभा का वर्णन करते हुए रसिक कवि पद्माकर कहते हैं कि ताल और तमाल वृक्षों की श्रेणियों पर, श्री वृन्दावन की सुन्दर विहार-पगडंडियों पर, निकुंज भवनों के छज्जों पर, सुन्दर लताओं पर, श्री लाडिली जी की गिरती हुई कुन्तलों पर, यहाँ तक कि सम्पूर्ण रास मंडल पर, शरद रात्रि की चाँदनी अतिशय सुन्दर ढंग से चमक रही है। और इस चाँदनी की सबसे सुन्दर छटा तो श्री कन्हैया के मुकुट से छिटक रही है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि पूज्य नानाजी-नानीजी के इस गृहस्थाश्रम से हम सब किसी न किसी निमित्त से जुड़े, उन्ही के परिवार का अंग बने, तथा उनके माध्यम से परम पूज्य बाबूजी एवं परम पूज्य राधा बाबा के श्रीचरणों का आश्रय भी हमें इतनी सहजता से प्राप्त हुआ। किसी भी संत-महापुरुष से जुड़ने का क्या महत्त्व है, इसपर प्रकाश डालते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं-- "जब मनुष्यका कोई अत्यन्त सुन्दर भाग्य जाग उठता है, तब उसमें पहले भगवान्‌के प्रति टान होती है और तब वह महापुरुषोंके संगमें जा पहुँचता है। महापुरुषका संग होते ही उसके द्वारा भजनकी क्रिया--अर्थात् श्रवण-कीर्तन आदि होने लगते हैं। श्रवण-कीर्तन होते-होते सभी दोष दूर हो जाते हैं और सभी दोष दूर होनेपर भक्तिमें निष्ठा उत्पन्न होती है। निष्ठा होनेपर तब भगवान् के गुण-लीला आदिके श्रवण-कीर्तनमें रुचि उत्पन्न होती है। रुचि होनेके बाद उसमें अत्यन्त आसक्ति हो जाती है। आसक्ति होनेपर फिर मनमें भगवान् के प्रति प्रीतिका अंकुर उत्पन्न होता है। यही प्रीतिका अंकुर जब गाढ़ हो जाता है तो इसे 'प्रेम' कहते हैं और यही सभी आनन्दको देनेवाली वस्तु है। "

पूज्य नानाजी के इस दिव्य जन्मोत्सव में सम्मिलित होकर इस भगवतप्रेम को अनुभव करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ, इस महती कृपा के लिए श्री युगल सरकार, श्री बालकृष्ण भगवान, परम पूज्य बाबूजी-बाबा, परम पूज्य महाराजजी-ठाकुरजी, परम पूज्या नानीजी-नानाजी एवं पूज्या माँ-मौसी के चरणों में कोटि कोटि प्रणाम। आभार रुप में अर्पित है श्री राधा नाम संकीर्तन।

(राधा नाम कीर्तन)